पाठ - नेताजी का चश्मा

शब्दार्थ -

1. **लागत** – खर्चा, मूल्य।
2. **ऊहापोह** – उलझन।
3. **शासनावधि** – शासन की अवधि।
4. **इकलौता** – केवल एक।
5. **पटक देना** – (भावार्थ) कार्य पूरा करना।
6. **निष्कर्ष** – परिणाम।
7. **प्रयास** – कोशिश।
8. **सराहनीय** – सराहना या प्रशंसा करने योग्य।
9. **बगैर** – बिना।
10. **दरकार** – जरूरत।
11. **फ्रेम** – चौखटा, चश्मे का चौखटा।
12. **द्रवित** – दया से पूर्ण।
13. **पारदर्शी** – आर-पार दिखने वाली।
14. **कौतुक** – आश्चर्य।
15. **खयाल** – विचार।
16. **नतमस्तक** – सिर झुकाना।
17. **भूतपूर्व** – पुराना।
18. **अवाक्** – मौन, चकित।
19. **मरियल-सा** – मरे हुए के समान, कमजोर।
20. **फेरी लगाना** – घूम-घूम कर सामान बेचना।
21. **गोगो चश्मा** – धूप का बड़ा काला चश्मा।
22. **कौतुक** – आश्चर्य।
23. **प्रफुल्लता** – खुशी।
24. **रवाना होना** – निकलना।
25. **चुकाना** – अदा करना, मूल्य देना।
26. **कौम** – जाति।
27. **खातिर** – के लिए।
28. **होम करना** – अर्पित, बलिदान करना।
29. **मौका** – अवसर।

egyanarchive

30.**प्रतिमा** – मूर्ति।

31.**मजबूर** – बेबस, विवश।

32.**स्पीड** – तेज गति।

33.**अटेंशन** – सावधान मुद्रा।

34.**सरकंडा** – गाँठदार सरपत का एक पौधा।

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर: सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे, क्योंकि उसके मन में देशभक्ति की भावना प्रबल थी। वह चश्मे वाला न तो सेनानी था, न नेताजी का साथी था फिर भी वह नेताजी सुभाष चन्द्र का बहुत सम्मान करता था। वह सुभाष चन्द्रजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति देखकर आहत था, इसलिए वह अपनी ओर से नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाता था। उसकी इसी भावना को देखकर लोग उसे सुभाष चन्द्र का साथी या सेना का कैप्टन कहकर पुकारते थे। चाहे वे मजाक उड़ाने की मुद्रा में उसे कैप्टन कहते हों लेकिन वह कस्बे का अगुआ था।

प्रश्न 2. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था, लेकिन बाद में तुरन्त रोकने को कहा -

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर: (क) हालदार साहब यह जानकर मायूस हो गये थे कि कैप्टन की मृत्यु हो गयी है। अब नेताजी की मूर्ति पर चश्मा पहनाने वाला कोई भी नहीं रहा। अब मूर्ति बिना चश्मे के ही खड़ी होगी।

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश के नागरिक अपने-अपने ढंग से देश के निर्माण में अपना योगदान देकर देशभक्ति का परिचय देते हैं। इसमें बड़े ही नहीं बच्चे भी शामिल हैं, क्योंकि यह सरकंडे का चश्मा किसी गरीब बच्चे ने ही बनाया है।

(ग) हालदार साहब के लिए सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगाना 'इतनी सी बात' नहीं थी। वह उनके लिए बहुत बड़ी महत्त्वपूर्ण बात थी, क्योंकि यह बात उनके मन में आशा जगाती थी कि अब भी हमारे देश के कस्बे-कस्बे में देशभक्ति की भावना जीवित है। इसी खुशी और आशा से वे भावुक हो उठे थे।

egyanarchive

प्रश्न 3. आशय स्पष्ट कीजिए

"बार-बार सोचते, क्या होगा कौम का जो अपने देश के खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर: आशय-जो कौम अपने देश के बलिदानियों का सम्मान करना नहीं जानती, उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। जिन लोगों ने देश की खातिर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया निश्चित ही वे सम्मान के पात्र हैं, लेकिन देश के बहुत से लोग उन पर भी हँसते हैं। एक छोटे से कस्बे में यदि कैप्टन नामक एक चश्मे वाला वृद्ध व्यक्ति सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाता रहा तो भी लोग उसकी देश-भक्ति पर हँसते रहे और उसे पागल एवं सनकी कहते रहे। जहाँ ऐसे स्वार्थी लोग रहते हों, उस देश का भविष्य कैसे सँभलेगा, क्योंकि वे अपने प्रचार-प्रसार में ही रुचि लेते हैं।

प्रश्न 4. पान वाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: पान वाले की दुकान चौराहे पर थी। वह दुकान पर आने वाले को जहाँ पान खिलाता था वहीं स्वयं भी अपने मुँह में पान ठूंसे रहता था। वह काला, मोटा और खुश-मिजाज आदमी था। उसकी तोंद निकली हुई थी। जब भी कोई व्यक्ति आकर उससे कोई बात पूछता था तो वह बताने से पहले पीछे मुड़कर थूकता था। फिर बताता था।

बताने के साथ-साथ वह हँसता भी जाता था जिससे उसकी तोंद भी थिरकने लगती थी और उसके पान वाले लाल-काले दाँत खिल उठते थे। वह बात बनाने और हँसी उड़ाने से भी उस्ताद था। इसके साथ ही वह भावुक भी था। कैप्टन की मृत्यु का समाचार सुनाकर स्वयं उदास हो गया था और उसकी आँखों में आँसू भी आ गये थे।

प्रश्न 5. "वो लँगड़ा क्या जायेगा फौज में। पागल है पागल!" कैप्टन के प्रति पान वाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर: कैप्टन देशभक्त था। हालदार साहब उसकी देशभक्ति के प्रति नतमस्तक थे। जब उन्होंने कैप्टन के बारे में जानना चाहा कि क्या वह व्यक्ति नेताजी का साथी है अथवा आजाद हिन्द फौज का सिपाही है, तब पानवाला उपेक्षापूर्ण ढंग से जवाब देता है कि "वो लंगडा क्या जायेगा फौज में। पागल है पागल!" कैप्टन के प्रति पान वाले की इस टिप्पणी पर मेरी प्रतिक्रिया यह है कि उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए, क्योंकि कैप्टन एक देशभक्त था।

वह देशभक्ति की भावना से पूरित होकर ही सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति की आँखों पर चश्मा लगाता रहता था, ऐसे व्यक्तियों की कमियाँ या कुरूपता को नहीं देखना चाहिए और न उनकी हँसी उड़ानी चाहिए। यदि हम उसकी तरह देशभक्ति न कर सकें तो भी हमें उसका कम से कम सम्मान तो करना ही चाहिए। अतः पान वाले की वह टिप्पणी उचित नहीं थी।

रचना और अभिव्यक्ति -

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं -

(क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

egyanarchive

(ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला-साहब ! कैप्टन मर गया।

(ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

उत्तर: -

(क) यह वाक्य हालदार साहब की देशभक्ति की भावना को प्रकट करता है। उनके मन में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के प्रति अपार सम्मान और श्रद्धा व्याप्त थी। इसके साथ ही उन्हें सुभाष जी की मूर्ति में गहरी रुचि थी। सुभाष जी की मूर्ति में चश्मे का न होना, फिर बार-बार चश्मा लगाने वाले के बारे में जानकारी प्राप्त करना-ये सब बातें उनकी देशभक्ति की भावना का ही बोध कराती हैं।

(ख) पानवाला यद्यपि कैप्टन के प्रति उपेक्षा दर्शाता था, फिर भी वह संवेदनशील व्यक्ति था। उसे कैप्टन की मृत्यु पर अत्यधिक दुःख हुआ था। उसे अनुभूति हुई थी कि कस्बे में कैप्टन जैसा देश-प्रेमी और कोई नहीं था। इसीलिए वह कैप्टन को याद करके उदास हो गया था और उसकी आँखों में आँसू आ गये थे।

(ग) कैप्टन के मन में अपार देशभक्ति की भावना थी। वह देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले नेताजी के प्रति अत्यधिक सम्मान रखता था। इसी कारण वह बिना चश्मे वाली नेताजी की मूर्ति पर बार-बार आकर चश्मा लगा देता था। इससे उसकी. देशभक्ति का परिचय मिलता था।

प्रश्न 7. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था, तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर: जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था, तब तक उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और ही रही होगी। उन्होंने सोचा होगा कि कैप्टन सेना का कोई भूतपूर्व कैप्टन होगा अथवा नेताजी की आजाद हिन्द फौज में कैप्टन रहा होगा। वह हट्टा-कट्टा अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा।

प्रश्न 8. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है

(क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं?

(ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों?

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

उत्तर:

(क) इस तरह की मूर्ति लगवाने के यही उद्देश्य हो सकते हैं कि लोग उस महान व्यक्ति के बारे में जानें। जनता के मन में उस

egyanarchive

महान व्यक्ति के प्रति आदर-सम्मान जागृत किया जाए और उसके योगदान से सभी को परिचित कराया जाए। जिससे नयी पीढ़ी उसके महान कार्यों से प्रेरणा लेती रहे।

(ख) हम अपने इलाके के चौराहे पर ऐसे व्यक्ति की मूर्ति लगाना चाहेंगे, जिसने देश व समाज के हितार्थ कोई उल्लेखनीय कार्य किया हो। इस दृष्टि से हम भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री स्व० लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमा स्थापित करवाना चाहेंगे, क्योंकि आज के स्वार्थी और भ्रष्टाचारी युग में उनका जीवन सरलता एवं ईमानदारी का जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी रहेगा।

(ग) उस मूर्ति के प्रति हमारे व अन्य लोगों के उत्तरदायित्व होंगे कि उस मूर्ति की नित्यप्रति सफाई होती रहे। इस मूर्ति के बारे में लोगों को जानकारी मिलती रहे और उस मूर्ति वाले व्यक्ति के जन्मदिन एवं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहें।

प्रश्न 9. सीमा पर तैनात फौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं। जैसे-सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे और कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।

उत्तर:

सामान्य जीवन-जगत से जुड़े देश-प्रेम को प्रकट करने वाले कई प्रकार के कार्य हो सकते हैं, जैसे-पानी को व्यर्थ न बहने देना, बिजली का सदुपयोग करना, इधर-उधर गन्दगी न फैलाना, प्लास्टिक के प्रयोग को रोकना, साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने हेतु प्रयास करना, राष्ट्र-ध्वज का सम्मान करना, देशभक्तों और शहीदों के स्मारकों का सम्मान करना, जनता में राष्ट्रभावना को विकसित करना, देश की एकता और अखण्डता के लिए प्रयत्न करना आदि।

egyanarchive

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। आप इन पंक्तियों को मानक हिन्दी में लिखिए –

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

उत्तर: कोई ग्राहक आ गया। उसे चौड़ा फ्रेम चाहिए। कैप्टन कहाँ से लाएगा? तो उसे मूर्ति वाला फ्रेम दे देता। मूर्ति पर कोई दूसरा फ्रेम लगा देता था।

प्रश्न 11. "भई खूब! क्या आइडिया है।" इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर: एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्द आ जाने से भाषा और अधिक ग्रहण करने योग्य बन जाती है तब इसे और

अधिक सरलता से समझा जा सकता है। जैसे उपर्युक्त वाक्य में दो शब्द हैं. 'खूब' तथा 'आइडिया'। ये दोनों शब्द क्रमशः उर्दू और अंग्रेजी भाषा के हैं। 'खूब' शब्द से यहाँ गहरी प्रशंसा का भाव है। यह भाव हिन्दी भाषा के 'सुन्दर' या 'अद्भुत' शब्द में नहीं है।

इसी प्रकार 'आइडिया' शब्द में जो भाव है वह हिन्दी भाषा के शब्द 'विचार', 'युक्ति' या 'सूझ' में नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि अन्य भाषाओं के प्रयुक्त होने वाले शब्द हमारी भाषा को समृद्ध करते हैं। यदि उनका प्रयोग कथन की स्वाभाविक रीति के आधार पर होता है तो वे वक्ता और श्रोता दोनों को ही प्रभावित करते हैं।

भाषा अध्ययन -

प्रश्न 12. निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए -

(क) नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।

(ख) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

(ग) यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।

(घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाये।

(ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे।

उत्तर:

(क) तो-मैंने तुम्हें जो काम लिखने को दिया था, वह लिख तो दिया। भी-मेरे साथ वह भी चलेगा।

(ख) ही-मैं घर जाने के लिए ही यहाँ आया हूँ।

(ग) तो-मेरे पास कोट तो है, परन्तु पुराना पड़ गया है।

(घ) भी-उस सज्जन को तुम भी मना नहीं सकोगे।

(ङ) तक-उसके आने तक, तुम यहीं ठहरो।

egyanarchive

प्रश्न 13. निम्नलिखित वाक्यों को कर्म वाच्य में बदलिए

(क) वह अपनी छोटी सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।

(ख) पानवाला नया पान खा रहा था।

(ग) पानवाले ने साफ बता दिया था।

(घ) ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे।

(ङ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

(च) हालदार साहब ने चश्मे वाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

उत्तर:

(क) उसके द्वारा अपनी छोटी सी दुकान पर उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिया जाता है।

(ख) पान वाले के द्वारा नया पान खाया जा रहा था।

(ग) पान वाले द्वारा साफ बता दिया गया था।

(घ) ड्राइवर द्वारा जोर से ब्रेक मारे गये।

(ङ) नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(च) हालदार साहब द्वारा चश्मे वाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

प्रश्न 14. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए जैसे-अब चलते हैं-अब चला जाए।

(क) माँ बैठ नहीं सकती।

(ख) मैं देख नहीं सकती।

(ग) चलो, अब सोते हैं।

(घ) माँ रो भी नहीं सकती।

उत्तर:

(क) माँ से बैठा नहीं जाता।

(ख) मुझ से देखा नहीं जाता।

(ग) चलो, अब सोया जाए।

(घ) माँ से रोया भी नहीं जाता।

<u>पाठेतर सक्रियता -</u>

प्रश्न 1. लेखक का अनुमान है कि नेताजी की मूर्ति बनाने का काम मजबूरी में ही स्थानीय कलाकार को दिया गया

(क) मूर्ति बनाने का काम मिलने पर कलाकार के क्या भाव रहे होंगे?

(ख) हम अपने इलाके के शिल्पकार, संगीतकार, चित्रकार एवं दूसरे कलाकारों के काम को कैसे महत्व और प्रोत्साहन दे सकते हैं? लिखिए।

उत्तर:

(क) नेताजी की मूर्ति बनाने वाला स्थानीय विद्यालय का चित्रकला का अध्यापक था। जब उसे मूर्ति बनाने का काम सौंपा गया, तो एक बार वह कुछ हिचका होगा, लेकिन साथ ही उसे अपनी कला पर गर्व भी हुआ होगा। वह सोचने लगा होगा कि अब उसकी कला को सभी लोग देखेंगे और उसकी कला की प्रशंसा करेंगे। सबकी जुबान पर एक कलाकार के रूप में अब उसका ही नाम होगा। उसकी प्रसिद्धि अब चारों ओर फैलेगी। उसे और काम मिलेगा। अब उसके पास खूब सारा धन आयेगा। उसका जीवन खुशियों से भर जायेगा।

(ख) हम अपने इलाके के शिल्पकार, संगीतकार, चित्रकार एवं दूसरे कलाकारों के काम की प्रशंसा करके उनको प्रोत्साहन दे सकते हैं एवं उन्हें दूसरी जगहों पर उचित पारिश्रमिक के साथ काम दिलाकर उनको महत्व दे सकते हैं और उन्हें पुरस्कार देकर या दिलवाकर सम्मानित कर या करवा सकते हैं।

egyanarchive

प्रश्न 2. आपके विद्यालय में शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण विद्यार्थी हैं। उनके लिए विद्यालय परिसर और कक्षा कक्ष में किस तरह के प्रावधान किए जाए, प्रशासन को इस सन्दर्भ में पत्र द्वारा सुझाव दीजिए।

उत्तर :

सेवा में,

श्रीमान् निरीक्षक महोदय,

जिला शिक्षा निरीक्षणालय,

भरतपुर

विषय - शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों के प्रबन्ध के संबंध में महोदय,

उपर्युक्त विषय क्रम में निवेदन है कि मैं आपका ध्यान हमारे विद्यालय के शारीरिक रूप से विकलांग चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में अध्ययनरत कुछ साथी शारीरिक रूप से लाचार हैं, फिर भी वे अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के आधार पर विद्यालय में रोज पढ़ने आते हैं। उनकी अपंगता और लाचारी देखकर यह मानवीय कर्तव्य बनता है कि उनके लिए कुछ व्यवस्थाएँ की जायें। बरामदों में जहाँ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, वहीं बीच-बीच में उनके लिए रैंप बनवाये जाने चाहिए तथा उन्हें विद्यालय आने-जाने के लिए व्हील चेयर की बहुत आवश्यकता है। इसके साथ ही इन छात्रों के लिए कृत्रिम टाँगें भी उपलब्ध करवायी जानी चाहिए।

आशा है कि आप मेरे सुझावों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की कृपा करेंगे और सहानुभूति पूर्वक विचार कर . यथोचित प्रबन्ध करेंगे।

सधन्यवाद !

दिनांक 13-3-20XX

egyanarchive

भवदीय

राहुल परिहार

कक्षा दशम 'क'

राज. उ.मा. विद्यालय, भरतपुर।

प्रश्न 3. कैप्टन फेरी लगाता था। फेरीवाले हमारे दिन-प्रतिदिन की बहुत-सी जरूरतों को आसान बना देते हैं। फेरी वालों के योगदान व समस्याओं पर एक सम्पादकीय लेख तैयार कीजिए।

उत्तर: हमारे देश में परम्परागत व्यापार का एक बहुत बड़ा हिस्सा फेरी वालों के हाथ में रहा है। ये फेरी वाले व्यापारी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। ये घूम-घूम कर अपना सामान बेचते हैं। घूम-घूम कर सामान बेचना इनकी मजबूरी होती है, इनका शौक नहीं। हमारी सरकारें समय-समय पर व्यापारियों की भलाई के लिए अनेक सुविधाएँ जुटाती हैं, परन्तु फेरी वाले उपेक्षित रह जाते हैं।

ये बेचारे रोज अपना माल गठरियों में बाँधकर साइकिलों और कन्धों पर रखकर गली-गली बेचते फिरते रहते हैं। सरकार चाहे तो इनके लिए रियायती दरों पर वाहनों की व्यवस्था कर सकती है और इन्हें बैंकों आदि से आसान ब्याज दरों पर कर्ज दिला सकती है। इनके साथ ही सामान रखने के केन्द्र खुलवा सकती है। ये फेरी वाले गांव-गांव घूमकर ग्रामीणों को अपना सामान बेचते हैं और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। एक तरह से ये फेरी वाले चलते-फिरते बाजार हैं। इसलिए इनकी समस्याओं पर भी विचार किया जाना चाहिए।

प्रश्न 4. अपने घर के आस-पास देखिए और पता लगाइए कि नगरपालिका ने क्या-क्या काम करवाए हैं? हमारी भूमिका उसमें क्या हो सकती है?

उत्तर: नगरपालिका ने हमारे लिए जल, सीवर, सड़क, बिजली और पार्कों की व्यवस्था की है। हमारी गलियों में प्रकाश व्यवस्था के लिए 'स्ट्रीट लाइट' रहती है। आवश्यकतानुसार हमारे यहाँ जल-आपूर्ति होती है। नित्य प्रति सुबह शाम सड़कों और गलियों की सफाई होती है। नगरपालिका ने जो पार्क बनवा रखा है, उसमें बच्चों को झूलने के लिए झूले, बड़ों को बैठने के लिए सीमेंट की बेंचें बनवा रखी हैं। पेड़-पौधे और घास की सिंचाई के लिए यह बागवान भी रख छोड़ा है। हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इन व्यवस्थाओं को बनाए रखने में नगरपालिका का सहयोग करें। यदि व्यवस्था सम्बन्धी कोई कमी महसूस हो तो उसकी उचित शिकायत उचित कार्यालय में ही करें।

egyanarchive